3. मीरा बाई

कवि परिचय

हिंदी के कृष्णभक्त कवियों में मीरा बाई का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके जन्मकाल तथा जीवन–वृत्त के विषय में बहुत मतभेद है परन्तु मुख्यतः माना जाता है कि मीरा मेड़ता के राव रत्नसिंह की पुत्री थीं। इनका जन्म 1498 ई० में कुड़की गाँव में हुआ था। राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह 1516 ई० में हुआ। कुछ वर्षों में ही कुँवर भोजराज मुगलों के साथ युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए और मीरा विधवा हो गई। बचपन से ही मीरा कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थीं। वे उन्हें ही अपना प्रिय और पति मानती थीं। लौकिक प्रेम में उनकी रुचि और निष्ठा नहीं थी। भगवान कृष्ण के प्रेम में दीवानी बनी मीरा ने .लोक लाज छोड़कर भक्ति का मार्ग अपनाया। साधु–संतों के साथ भक्ति भावना में लीन रहने और उनके साथ उठने–बैठने के कारण चित्तौड़ के राजपरिवार ने उनका विरोध किया। अंततः मीरा राजपरिवार को छोड़कर द्वाारका चली गईं। वहीं कृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गईं, ऐसी प्रसिद्धि है।

काव्य परिचय

मीरा ने विशेषतः पदों की रचना की थी। उनके पदों की अनेक टीकाएँ और संकलन बने हैं। उनके चार काव्य ग्रंथ हैं – 1. नरसी जी का मायरा, 2. गीत गोविंद की टीका, 3. राग गोविंद, 4. राग सोरठ।

मीरा के पद राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में हैं। कोई चमत्कार दिखाने के लिए उन्होंने काव्य नहीं रचा। भगवान के प्रति अनन्य अनुराग उनके पदों में सहज रूप से व्यक्त हुआ है।

मीरा का काव्य माधुर्य भाव का जीवंत रूप है। वे कृष्ण को ही अपना पति मानकर उपासना करती थीं। उनके लिए संसार में कृष्ण के अतिरिक्त दूसरा पुरुष अस्तित्व में ही नहीं था। कृष्ण के विरह में वे व्याकुल रहती थीं। यही व्याकुलता उनके पदों में व्यक्त हुई। शृंगार के विप्रलंभ पक्ष का चित्रण बहुत मार्मिक है। उनकी स्वानुभूति ने अभिव्यक्ति को अत्यधिक अनुपम बना दिया।

मीरा के पदों में प्रसाद और माधुर्य गुणों की प्रचुरता है। पदों में श्रुतिमधुर वर्णयोजना, सीधी–सादी उक्तियाँ और सच्चा आत्म निवेदन उनके काव्य की ऐसी विशेषताएँ हैं जो मीरा को प्रथम कोटि के भक्त कवियों में निस्संदेह स्थान प्रदान करती है।

पाठ संकेत

प्रस्तुत संकलन में उद्धृत मीरा बाई के पदों में उनकी कृष्ण–भक्ति व्यक्त होती है। वे अपने को कृष्ण की दासी, प्रियतमा, भक्त एवं उपासिका के रूप में मानती हैं। संसार को नश्वर मानकर कृष्ण को परमात्मा के रूप में भजने से ही जीव का कल्याण हो सकता है। जब तक प्रिय से भेंट नहीं होती, जीव व्यथित रहता है, चैन नहीं पड़ती। सद्गुरु की कृपा से भवसागर पार किया जा सकता है। वे कृष्ण को निर्गुण, सगुण, प्रिय, जोगी आदि अनेक संबोधनों से पुकारती हैं। यहाँ कृष्ण–प्रेम की अनन्यता प्रकट हुई है।

पदावली

भज मन! चरण–कँवल अविनासी।
जेताई दीसै धरणि–गगन विच, तेता (इ) सब उठ जासी।।
इस देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, सांझ पड्यां उठ जासी।।
कहा भयो है भगवा पहर्याँ, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होइ जुगति नहिं जांणि, उलटि जनम फिर आसी।।
अरज करूं अबला कर जोरे, स्याम! तुम्हारी दासी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर! काटो जम की फाँसी।।

(2)

दरस बिनु दूखण लागे नैन।
जब के तुम बिछुरे प्रभु मोरे कबहुँ न पायो चैन।।
सबद सुनत मेरी छतियाँ काँपै मीठे–मीठे बैन।
बिरह कथा कासूँ कहूँ सजनी, बह गई करवत अैन।।
कल न परत पल हरि मग जोंवत भई छमासी रैण।
मीराँ के प्रभु कबरे मिलौगे दुख मेटण सुख दैण।।

(3)

मैंने राम रतन धन पायो।
बसत अमोलक दी मेरे सतगुर, करि किरपा अपणायो।
जनम–जनम की पूँजी पायी, जग में सबै खोवायो।
खरचै नहिं चोर न लेवैं, दिन–दिन बधत सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तरि आयो।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरखि–हरखि जस गायो।।

(4)

माई री! मैं तो लियो गोविन्दो मोल।
कोई कहै छानै, कोई कहै चौड़े, लियो री बजंता ढोल।।
कोई कहै मुँहघो, कोई कहै सुँहघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कारो, कोई कहै गोरो, लियो री आँखी खोल।।
याही कूँ सब जग जाणत है, लियो री अमोलक मोल।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, पूरब जनम को कोल।।

शब्दार्थ

कँवल–कमल / अविनासी–नष्ट न होने वाला / करवत–आरा / जासी–जाएगा / चहरकी बाजी–चौसर खेल की बाजी / जम की फाँसी–यम का फंदा, काल–पाश / विण–बिना / नैण–नयन, नेत्र / छानै–छिपे तौर पर / मुँहघो–महँगा / सुँहघो–सस्ता /

पूरब जनम को कोल मीरा का कृष्ण के प्रति पूर्वजन्म के प्रेम का भाव प्रकट होता है। ऐसी मान्यता है कि पूर्व जन्म में मीरा ललिता नाम की गोपी थी, जो कृष्ण से प्रेम करती थी। मीरा ने उसी भाव को प्रकट किया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'लियो री बजंता ढोल' पंक्ति में 'बजंता ढोल' से मीरा का आशय है –
   (क) प्रसन्न होकर (ख) निशंक होकर
   (स) सबको दिखाकर (द) छिपकर ( )
2. मीरा के पदों में किस भाव की प्रधानता है ?
   (क) वीर (ख) वात्सल्य
   (ग) ओज (द) माधुर्य ( )

   उत्तरमाला – (1) ख (2) घ

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मीरा संसार को किस खेल के समान मानती है ?
2. सद्गुरु ने मीरा को कौन सी अमूल्य वस्तु प्रदान की ?
3. 'लियो री आँखी खोल' कथन से मीरा का क्या आशय है ?
4. मीरा को किस रत्न की प्राप्ति हुई ?
5. मीरा की भक्ति किस कोटि की है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मीरा की संसार के प्रति क्या धारणा है और वे अपने मन को क्या प्रेरणा देती है ?
2. मीरा ने राम रतन धन में क्या विशेषता पाई ?
3. 'मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, पूरब जनम को कोल' यहाँ पूरब जनम को कोल से क्या तात्पर्य है ?
4. 'सत की नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तरि आयो।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. मीरा के अनुसार हमारी देह किस प्रकार की है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. मीरा की भक्ति भावना पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
2. मीरा के पदों की काव्यगत विशेषता बताइए।
3. 'माई री! मैं तो लियो गोविन्दा मोल' पद का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) भजमन–चरण.....फाँसी।

(ख) मैंने राम रतन .....जस गायो।

•••

यह भी जानें

'छ' आकार में रहे। त्र के स्थान पर त्र का प्रयोग ही अपेक्षित है।

शृ का प्रयोग ही वांछित है (श्र का नहीं) जैसे – शृंगार, शृंखला आदि।